

डॉ. डेविड ए. डिसिल्वा , इब्रानियों, सत्र 10a, इब्रानियों 1 1:1-12:3: कार्य में विश्वास (भाग 1)

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

इब्रानियों 10:39 में विश्वास को एक महत्वपूर्ण मूल्य के रूप में पेश किया गया है जिसे किसी व्यक्ति को अपने जीवन या अपनी आत्मा को सुरक्षित रखने के लिए अपनाना चाहिए। लेखक इस बिंदु से शुरू करता है कि विश्वास किस तरह से कार्य करता है ताकि वह अपनी मण्डली को उस गुण के बारे में और मार्गदर्शन दे सके जो उनके जीवन को परिभाषित करने और उनके कदमों का मार्गदर्शन करने के लिए किसी भी अन्य गुण से अधिक है। इब्रानियों के तर्क की रूपरेखा अक्सर इब्रानियों 11 की सामग्री से इब्रानियों 12 की सामग्री तक संक्रमण के बिंदु के बारे में भिन्न होती है।

वहाँ कोई भी सीमा रेखा कुछ हद तक कृत्रिम होगी, कम से कम इसलिए नहीं कि अध्याय विराम सन्धियों बाद शुरू किए गए थे। फिर भी मैं कम से कम यह सुझाव दूंगा कि हम इब्रानियों 11:1 से 40 को विश्वास पर पाठ के अलग-अलग खंड के रूप में न सोचें, बल्कि इसे इब्रानियों 12 पद 3 तक विस्तारित करें, जबकि यह स्वीकार करते हुए कि इब्रानियों 12:1 से 3 भी आगे की बातों में एक सहज संक्रमण प्रदान करता है। हालाँकि, मुद्दा यह है कि 12 1 से 3 विश्वास के उदाहरणों की श्रृंखला में चरमोत्कर्ष है क्योंकि यहीं पर हमें यीशु का उदाहरण मिलता है, जिसे लेखक विश्वास का अग्रदूत और परिपूर्णकर्ता कहता है, जिसके उदाहरण में हम अध्याय 11 में चलने वाले विश्वास के उदाहरणों के कई तत्वों को क्रिस्टलीकृत देखते हैं।

इब्रानियों 12:1 से 3 भी अध्याय 11 में सामग्री के लिए एक मजबूत समापन उपदेश प्रदान करता है। इब्रानियों 11:1 से 12 3 अनिवार्य रूप से एक उदाहरण सूची है, और यह अन्य प्राचीन उदाहरण सूचियों से काफी मिलती जुलती है, खासकर उन लोगों से जो श्रोताओं को इन उदाहरणों में देखे गए व्यवहार या प्रथाओं की नकल करने या इन उदाहरणों की सूचियों में शामिल लोगों में देखी गई बुराइयों और गलतियों से बचने के लिए मनाने की कोशिश करने के संदर्भ में रचित हैं। अगर हम तुलना के लिए सेनेका की पुस्तक ऑन बेनिफिट्स की ओर मुड़ें, जहाँ पुस्तक 3 और 5 में हमें दो ऐसी उदाहरण सूचियाँ मिलेंगी जो इब्रानियों 11:1 से 12:3 में उदाहरण सूची से मिलती जुलती हैं, तो हम पाएंगे कि सेनेका ने उस सूची को संरचित करने के साधन के रूप में एनाफोरा नामक उपकरण का उपयोग किया है।

एनाफोरा एक अलंकार है जिसमें एक लेखक या वक्ता बार-बार एक ही शब्द या वाक्यांश से वाक्य शुरू करता है, जो प्रवचन में प्रत्येक नए चरण को चिह्नित करता है। इब्रानियों में, यह वाक्यांश है, विश्वास से, या ग्रीक में एक शब्द, पिस्ते, जो 11:1 से 12:3 के दौरान एक दर्जन से अधिक बार दिखाई देता है। सेनेका की उदाहरण सूचियों में उनके निष्कर्षों के पास सारांश कथन भी हैं, इस तथ्य के कथन कि ऐसे अनगिनत अन्य हैं जिनका नाम लिया जा सकता है, लेकिन अगर मैं उनका नाम लेने की कोशिश करूँगा तो मेरे पास समय नहीं बचेगा। इब्रानियों के लेखक ने 11 श्लोक 32 की शुरुआत में इसी उपकरण का उपयोग किया है, जहाँ वह कहता है,

मेरे पास विश्वास के अन्य उदाहरणों के बारे में बताने के लिए समय नहीं है, जिसके बाद वह सबसे संक्षिप्त संदर्भ देता है।

इसके अलावा, सेनेका की उदाहरण सूची में सकारात्मक उदाहरणों का अनुकरण करने के लिए अंतिम उपदेश मिलते हैं, वही बात जो इब्रानियों 12:1 से 3 में भी है। हमारे चारों ओर गवाहों का इतना बड़ा बादल होने के कारण, हमें भी दौड़ में भाग लेना चाहिए। इब्रानियों का तथाकथित विश्वास अध्याय, फिर, विश्वास के उदाहरणों की प्रशंसनीयता को प्रदर्शित करने के लिए तैयार है। उदाहरण के लिए, नूह, अब्राहम और मूसा को इन सभी शताब्दियों में याद किया गया है, यह तथ्य दर्शकों को यह साबित करता है कि विश्वास का मार्ग वास्तव में ईश्वर की चरित्र गवाही प्राप्त करने का मार्ग है कि एक व्यक्ति का जीवन सम्मानपूर्वक जिया गया है और एक प्रशंसनीय स्मरण प्राप्त कर रहा है।

यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, यह देखते हुए कि किस तरह से आस्था के समुदाय में शामिल होने से श्रोता का सम्मान और उनके पड़ोसियों के बीच प्रशंसनीय स्मरण की संभावना नष्ट हो गई है। 11:1 से 12:3 में उदाहरण के रूप में पेश किए गए लोग यह भी बताते हैं कि विश्वास किस तरह से काम करता है। कई, विशेष रूप से अब्राहम, मूसा, शहीद और यीशु, अध्याय 10, श्लोक 32 से 34 में श्रोताओं के अपने पिछले अनुभव और विकल्पों के साथ स्पष्ट रूप से प्रतिध्वनित होते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि लेखक ने अपने श्रोताओं की विशिष्ट स्थिति को संबोधित करने और निंदा, शर्म, हानि और शत्रुता का सामना करते हुए आगे बढ़ते रहने के अपने उपदेश का समर्थन करने के लिए विश्वास के अपने उदाहरणों का चयन और आकार दिया है। यह उन लोगों की सूची है, जिन्होंने विश्वास और धैर्य के माध्यम से, उन वादों को विरासत में प्राप्त किया, जैसा कि लेखक ने इब्रानियों 6 पद 12 में पूर्वाभास किया था, इस प्रकार लेखक द्वारा अभिभाषक के अनुकरण के लिए रखे गए मॉडल की तस्वीर को पूरा किया। हम इस बारे में कुछ सामान्य अवलोकन कर सकते हैं कि इब्रानियों के लेखक ने पाठ के विवरण में जाने से पहले इस खंड में विश्वास को कैसे दर्शाया है।

सबसे पहले, जो लोग भरोसा या आस्था दिखाते हैं, वे ईश्वर के इनाम और ईश्वर के वादों और चेतावनियों के पूरा होने की प्रतीक्षा करते हैं। दूसरे, वे इस दुनिया में अपने जीवन को पूरी तरह से ईश्वर के भविष्य के ज्ञान के आधार पर उन्मुख करते हैं। तीसरे, वे अपने चुनाव इस आधार पर करते हैं कि ईश्वर के वादा किए गए उपकार को प्राप्त करने के लिए कौन सा मार्ग उपयुक्त है, भले ही उस कार्य का अर्थ सांसारिक स्थिति, मातृभूमि, सम्मान, धन और यहाँ तक कि जीवन को भी खोना हो।

कोई भी कठिनाई उन्हें परमेश्वर द्वारा उनके लिए निर्धारित लक्ष्य का पीछा करने से नहीं रोक सकती। चाहे परमेश्वर के प्रति वफ़ादारी और आज्ञाकारिता का मार्ग उन्हें प्रसिद्धि या बदनामी, मुक्ति या पीड़ा दिलाए, वे इस जीवन में इसी मार्ग का अनुसरण करते हैं। वे इस दुनिया को बस अपने प्रवास की भूमि मानते हैं, और हमेशा उस शहर और मातृभूमि की ओर देखते हैं जिसे

परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए तैयार किया है, वह अडिग राज्य, वह शहर जिसकी नींव को हिलाया नहीं जा सकता।

वे यहाँ लगातार रहते हैं ताकि वहाँ उनका स्वागत खतरे में न पड़े। लेखक ने आस्था पर अपनी प्रशंसा की शुरुआत आस्था की परिभाषा से की है। आस्था आशा की जाने वाली चीज़ों का सार है, न देखी गई चीज़ों का प्रमाण है।

क्योंकि इसके माध्यम से, प्राचीनों को प्रमाण प्राप्त हुआ। लेखक यहाँ एक व्यापक परिभाषा नहीं बल्कि एक ऐसी परिभाषा देने का प्रयास करता है जो श्रोताओं को विश्वास या भरोसे के तत्वों पर ध्यान केंद्रित करेगी, जो लेखक के उपदेश के लिए केंद्रीय हैं। एक शुरुआती बिंदु के रूप में, वह विश्वासयोग्य व्यक्ति के आशा की जाने वाली और अनदेखी चीज़ों के प्रति उन्मुखीकरण पर प्रकाश डालता है, विश्वास से जीने के पहलू जो बाद में आने वाले विश्वास के उदाहरणों में बार-बार सामने आते हैं।

परिभाषा के पहले भाग में, लेखक ग्रीक शब्द हाइपोस्टैसिस का उपयोग करता है। विश्वास या पिस्टिस, भरोसा, आशा की जाने वाली चीज़ों का हाइपोस्टैसिस है। दार्शनिक भाषा में, हाइपोस्टैसिस शब्द किसी चीज़ के पदार्थ या अंतर्निहित सार को दर्शा सकता है।

इब्रानियों 1:3 में कुछ इसी तरह का भाव दर्शाया गया है, जिसमें यीशु को परमेश्वर के स्वरूप, परमेश्वर के अस्तित्व, परमेश्वर के आवश्यक चरित्र और सार का प्रतिबिम्ब कहा गया है। हालाँकि, रोज़मर्रा की कानूनी या व्यावसायिक भाषा में, स्वरूप का अर्थ एक शीर्षक विलेख या गारंटी भी हो सकता है, जैसा कि कई पपीरी और शास्त्रीय ग्रंथों द्वारा प्रमाणित किया गया है। यदि इसे इस अर्थ में सुना जाए, तो 11.1 में विश्वास की परिभाषा भी मसीह और 10.34 में संदर्भित ईसाई समूह के प्रति उनकी वफ़ादारी के कारण विश्वासियों की संपत्ति के नुकसान की सीधे बात करती है। स्वरूप के दोनों अर्थ इस धारणा को रेखांकित करते हैं कि परिभाषा व्यक्तिपरक नहीं है, जो यह समझाने की कोशिश करती है कि विश्वास कैसा लगता है, उदाहरण के लिए, आशा की जाने वाली चीज़ों के बारे में आश्वासन की भावना, न ही मानसिक दृढ़ विश्वास के बारे में जो विश्वास पैदा करता है, उदाहरण के लिए, अदृश्य चीज़ों के बारे में दृढ़ विश्वास।

बल्कि, परिभाषा यह प्रकट करने का प्रयास करती है कि भरोसा या विश्वास अपने आप में क्या है और इस प्रकार, विश्वास या भरोसा करने का महत्व क्या है। जो लोग भरोसा करते हैं, उनके पास वास्तव में वह स्वामित्व होता है, जिस पर वे भरोसा करते हैं कि वह व्यक्ति क्या प्रदान करेगा। उनके पास पहले से ही भविष्य के अच्छे का अंतर्निहित सार है जिसकी वे उम्मीद कर रहे हैं।

यह परिभाषा श्रोताओं को परमेश्वर के वादों पर अपना भरोसा बनाए रखने के लिए प्रेरित करने के लिए बनाई गई है, न कि अविश्वास के कारण सब कुछ खो देने के लिए, जैसा कि जंगल की पीढ़ी ने किया था। विश्वास की इस परिभाषा के दूसरे भाग में, लेखक ने एलेनचोस शब्द का उपयोग किया है। विश्वास उन चीज़ों का एलेनचोस है जिन्हें देखा नहीं जा सकता।

यह शब्द एक अकाट्य या आवश्यक तथ्य को दर्शाता है। यह एक ऐसा डेटा है जिसे विपक्ष द्वारा पलटा नहीं जा सकता है और जो कानून की अदालत या परिषद कक्ष में किसी के मामले को

स्थापित करता है। चूंकि पिस्टिस, वह शब्द जिसे हम आम तौर पर विश्वास या भरोसे के रूप में अनुवाद करते हैं, का अर्थ कानूनी अदालतों में प्रमाण के रूप में भी था, इसलिए परिभाषा का दूसरा भाग इस तर्क के संदर्भ में भी स्वाभाविक अर्थ रखेगा।

प्रमाण उन चीजों की संदेह से परे स्थापना है जिन्हें जूरी में किसी ने वास्तव में नहीं देखा लेकिन जिन पर उन्हें अब फैसला सुनाना चाहिए या उन चीजों की संदेह से परे स्थापना जिन्हें परिषद कक्ष में दर्शकों ने अभी तक नहीं देखा है लेकिन उन्हें पहले से योजना बनानी चाहिए। इस परिभाषा में, हम विश्वास और इन अभी तक अनदेखी वास्तविकताओं के बीच एक तरह का पारस्परिक संबंध पाते हैं। विश्वास के बिना, उत्तरार्द्ध कभी भी साकार नहीं होता है, जबकि विश्वास के द्वारा, इन अभी तक अनदेखी वस्तुओं की वास्तविकता यहाँ और अभी में प्रदर्शित होती है।

यहाँ 11, श्लोक 1 में विश्वास और अध्याय 6, श्लोक 19 और 20 में लेखक की आशा की चर्चा के बीच एक निश्चित संबंध भी निर्मित किया जा रहा है। यहाँ विश्वास शाश्वत विरासत का शीर्षक है। 6, 19 से 20 में, आशा वह बंधन है जो किसी को शाश्वत बंदरगाह से जोड़ता है।

इस तरह, विश्वास और आशा दोनों ही श्रोताओं को मसीह में जो कुछ भी है उसे थामे रखने के लिए प्रेरित करते हैं और मसीह के साथ उनके रिश्ते को पहले हिस्से के रूप में, या यदि आप चाहें तो अग्रिम भुगतान के रूप में, जो कुछ भी उनके हाथ में है, उसे थामे रखने पर आने की गारंटी है, अर्थात् विश्वास और आशा। भरोसा या विश्वास किसी ऐसी चीज की शुरुआत है जिसमें पूर्ण अधिकार और आनंद अंत है। इब्रानियों 3.14 में, लेखक ने कहा कि विश्वासी, उद्धरण, मसीह के भागीदार बने रहते हैं यदि हम हाइपोस्टैसिस की पहली किस्त को अंत तक दृढ़ रखते हैं।

इन वादा किए गए सामानों के सार की पहली किस्त अंत तक दृढ़ है। 3:14 में लेखक का क्या मतलब था, यह अब पुष्ट हो गया है और भरोसे की इस परिभाषा से कुछ हद तक स्पष्ट हो गया है। अगर हमारे पास विश्वास है और हम परमेश्वर के प्रति भरोसा दिखाते हैं, तो हमारे पास वह अधिकार पत्र और सार है जिसकी हम आशा करते हैं।

क्योंकि परमेश्वर पूरी तरह से विश्वसनीय है, इसलिए परमेश्वर ने जो वादा किया है उसे पूरा करने में वह पूरा करेगा। अगर हमारे पास आशा है, तो हम पहले से ही उस स्थायी क्षेत्र में लंगर डाले हुए हैं और बंधे हुए हैं, जिसमें हम अभी भी प्रवेश करने की उम्मीद करते हैं। इस अध्याय की दूसरी आयत में, लेखक जल्दी से विश्वास की अपनी परिभाषा को इस पुष्टि के साथ आगे बढ़ाता है कि विश्वास ही प्रमाण प्राप्त करने का तरीका है, मार्टुरिया, क्योंकि इसके द्वारा, विश्वास के द्वारा, बड़ों को प्रमाण या अनुमोदन प्राप्त हुआ।

फ्रेडरिक डोनकर द्वारा लाभार्थियों के शिलालेखों के अध्ययन से पता चलता है कि मार्टुरिया का बार-बार इस्तेमाल किया जाता था और मार्टुरिया के इर्द-गिर्द बने शब्द समूह का इस्तेमाल रोमन अधिकारियों द्वारा किसी ऐसे व्यक्ति के समर्थन को व्यक्त करने के लिए किया जाता था जिसे स्थानीय सभा सम्मानित करना चाहती थी। यह अधिकारी की इस पुष्टि का प्रतिनिधित्व करता था कि उम्मीदवार वास्तव में सम्मान पाने के योग्य था और राजनीतिक रूप से विश्वसनीय था। क्रिया मार्टुरिया के रूप यहाँ अध्याय 11 में श्लोक 2, 4, 6 और फिर 39 में दिखाई देते हैं।

यह पुनरावृत्ति यह सुझाव देती है कि लेखक इस बात पर ज़ोर देना चाहता है कि विश्वास में दृढ़ता के परिणामस्वरूप परमेश्वर के दरबार में अभिभाषकों की समान मान्यता होगी, उनके मूल्य की गवाही होगी, और उन्हें अनंत सम्मान मिलेगा। इब्रानियों 11, आयत 3 से 7 में, लेखक बाढ़ से पहले के मामलों या बाढ़ से पहले रहने वाले लोगों के संबंध में प्रदर्शित विश्वास के कई उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसलिए, आयत 3 में, वह लिखता है, विश्वास के द्वारा, हम युगों को परमेश्वर के वचन द्वारा स्थापित मानते हैं ताकि जो दिखाई देता है वह संवेदी अनुभव के लिए उपलब्ध न होने वाली चीज़ों से अस्तित्व में आया।

इब्रानियों 11:3 दृश्य की अदृश्य पर अंतिम निर्भरता और इस प्रकार अदृश्य क्षेत्र की श्रेष्ठता और सर्वोच्चता की पुष्टि करता है। दृश्य क्षेत्र अदृश्य क्षेत्र पर निर्भर है और इसलिए, उससे कम मूल्यवान और स्थायी है। यह श्लोक दृश्य सृष्टि को उस अदृश्य क्षेत्र के लिए एक तरह का प्रमाण बनाने का काम भी कर सकता है, जहाँ से यह उत्पन्न हुआ है।

तर्क यह होगा कि यदि प्रभाव मौजूद है तो कारण भी मौजूद होना चाहिए। यह लेखक के निरंतर प्रयास का हिस्सा है, जो संबोधित लोगों को अपनी आशा को बनाए रखने और दृश्यमान वास्तविकता से परे उस स्थायी, स्थायी, अंतिम क्षेत्र में अपना घर खोजने के लिए प्रेरित करता है। यह अदृश्य क्षेत्र इस पूरे अध्याय में आस्था के कई उदाहरणों का मुख्य केंद्र होगा।

आस्था अपने कार्य की रूपरेखा तैयार करते समय अदृश्य और भविष्य की वास्तविकताओं को ध्यान में रखती है। यह विषय यहाँ श्लोक 3, 7, 10, 15, 20, 22, 26 और 27 में और अंत में श्लोक 35 में दिखाई देगा। आस्था के नायक उचित मूल्यांकन और चुनाव केवल इसलिए करते हैं क्योंकि वे दृश्यमान, भौतिक और संवेदी दुनिया से परे देखने में सक्षम हैं।

पद 4 में, लेखक ने विश्वास के उदाहरण के रूप में हाबिल का उदाहरण दिया है। विश्वास के द्वारा, हाबिल ने कैन से बड़ा बलिदान चढ़ाया, जिसके द्वारा उसे धर्मी होने का प्रमाण मिला, परमेश्वर ने उसके उपहारों के साथ-साथ गवाही दी, और इसके द्वारा, यद्यपि वह मर चुका था, फिर भी वह बोलता है। दूसरे मंदिर काल के दौरान इस बात को लेकर काफी अटकलें लगाई गईं कि परमेश्वर के अनुमान में हाबिल का बलिदान कैन के बलिदान से बेहतर क्यों था।

हम इसे हिब्रू उत्पत्ति के सेप्टुआजेंट अनुवाद में पहले से ही पाते हैं, जहाँ सेप्टुआजेंट अनुवादक कैन की भेंट को अस्वीकार किए जाने के बारे में कुछ स्पष्टीकरण देता है। हम वहाँ पढ़ते हैं कि यदि तुम, कैन, ने इसे सही तरीके से चढ़ाया होता, लेकिन तुमने इसे सही तरीके से विभाजित नहीं किया होता, तो तुम पाप नहीं कर रहे होते, है न? हाबिल और कैन के नैतिक गुणों के उनके संबंधित भेंटों की स्वीकार्यता के संबंध के बारे में अटकलें भी अच्छी तरह से प्रमाणित हैं। उदाहरण के लिए, जोसेफस के पुरावशेषों में, जैसा कि वह उत्पत्ति के शुरुआती अध्यायों पर अपना विस्तृत विवरण लिखता है।

इब्रानियों के लेखक के लिए, यह विश्वास या भरोसे की उपस्थिति है जो हाबिल के बलिदान को कैन के बलिदान से बड़ा बनाती है, जो हाबिल को उस वास्तविकता का आनंद लेने की ओर ले जाती है जिसे वह ईश्वर पर भरोसा करके प्रदान करता है, अर्थात् मृत्यु के बाद जीवन। उत्पत्ति

स्वयं हाबिल को न्यायी या धर्मी नहीं कहती है, लेकिन ग्रीक शब्द डाइकायोस , हाबिल के लिए एक सामान्य विशेषण बन जाता है और दूसरे मंदिर काल और उसके साहित्य के माध्यम से उसकी जीवनशैली का लगातार वर्णन करता है। लेखक हाबिल को न्याय या धार्मिकता प्रदान करने की इस परंपरा को साझा करता है।

उत्पत्ति 4 में, हम हाबिल के खून के बारे में पढ़ते हैं जो ज़मीन से परमेश्वर को पुकार रहा था। यह एक तरह से बाइबिल के कथन का संस्करण है, हत्या बाहर आ जाएगी, न कि कैन द्वारा मारे जाने के बाद हाबिल के अस्तित्व का संकेत। हालाँकि, इब्रानियों के लेखक ने इसे एक संकेत के रूप में व्याख्यायित किया है कि हाबिल, हालांकि मर चुका है, फिर भी मृत्यु से परे जीवित है और बोलने की क्षमता रखता है।

हाबिल उस व्यक्ति का पहला उदाहरण बन जाता है जो विश्वास के द्वारा कब्र से परे जीता है, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर पर भरोसा करने वाले सभी लोग जीवित रहेंगे। हाबिल का उदाहरण और उसके बाद आने वाले हनोक का उदाहरण इस बात को रेखांकित करता है कि विश्वास के द्वारा जीने से मृत्यु से परे चला जाता है, एक ऐसा विषय जो इस प्रशंसा के शेष भाग में गूंजता रहेगा। छंद 5 और 6 में, लेखक हनोक के उदाहरण के समय में आगे बढ़ता है क्योंकि वह लिखता है, विश्वास के द्वारा, हनोक को मृत्यु को न देखने के लिए उठाया गया था, और वह नहीं मिला क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठाया था।

क्योंकि अनुवाद से पहले, उसे परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला प्रमाणित किया गया था, और बिना विश्वास के प्रसन्न होना असंभव है, क्योंकि परमेश्वर के निकट आने वाले व्यक्ति के लिए यह विश्वास करना आवश्यक है कि परमेश्वर मौजूद है और परमेश्वर उन लोगों को पुरस्कृत करता है जो उसे खोजते हैं। उत्पत्ति 5 के हिब्रू पाठ में, श्लोक 22 और 24 में, हमें हनोक के मायावी चरित्र के बारे में थोड़ी जानकारी मिलती है। वहाँ, हम पढ़ते हैं कि हनोक 300 साल पहले मत्तूशेलह के जन्म के बाद परमेश्वर के साथ चला।

हनोक परमेश्वर के साथ चला, लेकिन वह अब वहाँ नहीं था क्योंकि परमेश्वर ने उसे ले लिया था। एक बार फिर, सेप्टुआजेंट अनुवाद उत्पत्ति की मूल रचना और उस कहानी की हिब्रू व्याख्या के लेखक के बीच व्याख्यात्मक प्रक्रिया में हस्तक्षेप करता है। सेप्टुआजेंट संस्करण हिब्रू में परमेश्वर के साथ चला का अनुवाद प्रसन्न परमेश्वर के रूप में करता है, और इसलिए सेप्टुआजेंट संस्करण में, 300 वर्षों तक परमेश्वर को प्रसन्न करने के बाद, हनोक फिर कभी नहीं मिला क्योंकि परमेश्वर ने उसे ले लिया।

हाबिल की तरह, इब्रानियों के लेखक ने अब हनोक की कहानी में विश्वास के गुण को शामिल किया है। यह वह गुण है जो किसी को मृत्यु से परे और इस दृश्यमान क्षेत्र से परे जीवन का आनंद लेने के लिए प्रेरित करता है, जैसा कि हनोक ने आनंद लिया था। सेप्टुआजेंट की परंपरा का पालन करते हुए, इब्रानियों के लेखक ने हनोक के बारे में कहा कि वह परमेश्वर को प्रसन्न करता है।

जैसे-जैसे उपदेश जारी रहेगा, इस शब्द के रूप गूंजते रहेंगे। हम इसे फिर से 12:28 में और फिर 13 आयत 16 और 21 में देखेंगे। लेखक विश्वासी के लिए परमेश्वर को प्रसन्न करने को एक प्राथमिक मूल्य के रूप में बढ़ावा दे रहा है, जो मृत्यु से जीवन में पार होने का इनाम लाता है।

यह ईसाइयों को बाहरी लोगों की राय और स्वीकृति से अलग करने की उनकी रणनीति के अनुकूल है, जो उन्हें समूह से जुड़ाव से दूर ले जाएगा, इसके बजाय उन्हें पूरी तरह से ईश्वर की स्वीकृति पर ध्यान केंद्रित करेगा, जो उन्हें ऐसे व्यवहार की ओर ले जाएगा जो समूह को बनाए रखता है और ईसाई समूह के मूल्यों को लागू करता है। 116 में, लेखक हनोक के उदाहरण के अपने चित्रण पर एक संक्षिप्त टिप्पणी करते हैं, इस सवाल का जवाब देते हुए कि अगर किसी को ईश्वर को प्रसन्न करना है तो क्या आवश्यक है? लेखक ईश्वर के अस्तित्व पर भरोसा करने और ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए पूर्वपेक्षा के रूप में इस बात पर भरोसा करने की पहचान करता है कि ईश्वर उन लोगों को पुरस्कृत करता है जो उसे खोजते हैं। लेखक यहाँ विश्वास या आस्था को समझने के लिए एक संरक्षक-ग्राहक संदर्भ को दर्शाता है, ईश्वर की ओर देखना और उस पर भरोसा करना, जिसका अनुग्रह पाने के योग्य है और जिसका अनुग्रह, जब दिया जाता है, तो उसे प्राप्त होने की उम्मीद की जा सकती है।

पद 7 में, लेखक अपने अंतिम जल-प्रलय-पूर्व उदाहरण की ओर बढ़ता है। विश्वास के द्वारा, नूह ने, अभी तक न देखी गई घटनाओं के बारे में चेतावनी पाकर और श्रद्धापूर्वक प्रतिक्रिया करते हुए, अपने घराने के उद्धार के लिए एक जहाज़ तैयार किया, जिसके माध्यम से उसने संसार की निंदा की और उस धार्मिकता का वारिस बन गया जो भरोसे के साथ आती है। उत्पत्ति 6-9 में, विशेष रूप से सेप्टुआजेंट संस्करण में, नूह को धर्मी, डिकायोस और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले के रूप में पेश किया गया है।

फिर से, उस अपेक्षाकृत असामान्य शब्द का उपयोग करते हुए, अच्छी तरह से प्रसन्न होना, *eiou* एरेस्टेसे। लेखक, बेशक, बाढ़ के आने की चेतावनी और नूह की श्रद्धापूर्ण आज्ञाकारिता को संदर्भित करता है, जो उस समय पूरी तरह से सूखी हुई नाव का निर्माण कर रही थी। नूह की इंद्रियों और अनुभवों के लिए पूरी तरह से अप्राप्य कुछ भविष्य की घटनाओं के बारे में परमेश्वर द्वारा चेतावनी दिए जाने के बावजूद, नूह ने परमेश्वर के वचन पर भरोसा किया और उसके अनुसार कार्य किया।

क्योंकि उसने भविष्य की उन अदृश्य वास्तविकताओं के प्रकाश में अपना मार्ग निर्धारित किया था, इसलिए उसे और उसके पूरे परिवार को सुरक्षा और उद्धार मिला। लेखक ने अपनी मण्डली को उनकी स्थिति को नूह के समान देखने के लिए कहा। न्याय का एक और दिन आ रहा है, अंतिम न्याय का दिन और तत्वों का प्रलयकारी, युगांतकारी कंपन जो दृश्यमान आकाश और पृथ्वी को हटा देगा।

इसलिए, उन्हें नूह की तरह इस बात पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि वर्तमान स्थिति में वास्तव में क्या उचित है, यह समझने के लिए कैसे तैयार रहें। नूह की तरह, उन्हें वह करने के लिए कहा जाता है जो उनके पड़ोसी वर्तमान समय में मूर्खतापूर्ण मान सकते हैं क्योंकि भविष्य के न्याय के

दिन जो सबसे बुद्धिमानी भरा कदम होगा, वह अभी तक प्रकट नहीं हुआ है। इब्रानियों 11 पद 8 में, लेखक विश्वास के एक उदाहरण के रूप में अब्राहम के पास आता है।

यह इस प्रशंसा में पहला पर्याप्त रूप से विकसित उदाहरण है, जो इसलिए श्रोताओं से विशेष ध्यान आकर्षित करता है। अब्राहम की कहानी विशेष रूप से इस बात पर जोर देने के लिए बनाई गई है कि, सबसे पहले, इस दुनिया की सामाजिक संरचनाओं के संबंध में विश्वास के व्यक्ति की मुद्रा और, दूसरा, विश्वास की दूरदर्शी गुणवत्ता। और इसलिए हम पढ़ते हैं, विश्वास से, अब्राहम को उस स्थान पर जाने के लिए बुलाया गया जिसे वह विरासत के रूप में प्राप्त करने वाला था, उसने आज्ञा का पालन किया, और वह बाहर चला गया, हालाँकि वह नहीं जानता था कि वह कहाँ जा रहा है।

विश्वास के द्वारा, वह प्रतिज्ञा के देश में ऐसे रहा जैसे कि वह किसी दूसरे देश में हो, और इसहाक और याकूब के साथ, जो उसी प्रतिज्ञा के सह-उत्तराधिकारी थे, तम्बुओं में रहा, क्योंकि वह उस नगर की प्रतीक्षा कर रहा था जिसकी नींव है, जिसका शिल्पकार और निर्माता परमेश्वर है। लेखक यहाँ अब्राहम के इस भरोसे पर जोर नहीं देता कि परमेश्वर ने संतान के वादे को पूरा किया है, जैसा कि पौलुस ने गलातियों 3 या रोमियों 4 में किया था। इसके बजाय, लेखक परमेश्वर के आह्वान के प्रति आज्ञाकारिता में अपनी जन्मभूमि को पीछे छोड़ने की अब्राहम की इच्छा पर ध्यान केंद्रित करता है।

आस्थावान लोग ईश्वर के आह्वान और वादे का पालन करने के लिए अपनी जन्मभूमि में अपनी आरामदायक जड़ें स्वेच्छा से छोड़ देते हैं, किसी भी सांसारिक स्थान पर विदेशी और परदेशी की स्थिति को स्वीकार करते हैं। लेखक इसे अब्राहम की ओर से एक जानबूझकर किया गया चुनाव बताते हैं कि उसने अपनी स्थिति खोने और अपमान और खतरे की जिम्मेदारी लेने का फैसला किया क्योंकि प्राचीन दुनिया में अप्रवासियों को काफी कम सुरक्षा मिली हुई थी। और अब्राहम, बेशक, यह सब ईश्वर के आह्वान के प्रति आज्ञाकारिता के लिए करता है।

दर्शकों को लगेगा कि दुनिया की नज़रों में कमतर दर्जा पाने की कुलपति की इच्छा उनकी अपनी स्थिति के लिए तुरंत प्रासंगिक है। उन्हें भी, अब्राहम की तरह, एक तरह से अपनी जन्मभूमि को पीछे छोड़ना पड़ा है। हो सकता है कि उन्होंने अब्राहम की तरह खुद को अपनी जन्मभूमि से शारीरिक रूप से दूर न किया हो, लेकिन उन्होंने सामाजिक रूप से खुद को घर जैसी जगह से दूर कर लिया है।

और इसलिए, वे अब्राहम को उनके द्वारा किए गए कार्यों के लिए एक उपयुक्त उदाहरण मानते हैं, जो विश्वास के कारण, परमेश्वर के शाश्वत शहर में अधिक सम्मान की आशा में दुनिया की नज़रों में एक निम्न स्थिति को अपनाते हैं। लेखक के अनुसार, अब्राहम अंततः कनान, पारंपरिक वादा किए गए देश को अपनी विरासत के रूप में नहीं देख रहा था। यह उनके लिए अब्राहम के तंबुओं में रहने का महत्व था, यहाँ तक कि कनान में प्रवेश करने के बाद भी, और इस समय के दौरान भी यह घोषणा करना कि वह अभी भी एक प्रवासी और एक अजनबी था।

लेखक ने दावा किया है कि कनान में अपने पूरे समय के दौरान, अब्राहम अभी भी एक बेहतर मातृभूमि की तलाश में था, स्वर्ग में रहने वाली मातृभूमि को समझता था, शहर की नींव थी, जिसका वास्तुकार और निर्माता ईश्वर है, जो ईश्वर द्वारा उसके और उसके वंशजों के लिए किए गए वादे का सच्चा उद्देश्य है। लेखक अब्राहम से ईश्वर के वादे को अंततः स्वर्गीय विश्राम के वादे के रूप में समझता है, जिसमें प्रवेश करने के लिए ईसाइयों को भी प्रयास करते रहना चाहिए। इस प्रकार संबोधित करने वाले वास्तव में एक ही वादे के सह-उत्तराधिकारी हैं, एक बिंदु जिसे लेखक अध्याय 11 के अंतिम दो छंदों में स्पष्ट करेगा।

जैसे-जैसे लेखक अब्राहम के उदाहरण को विकसित करना जारी रखता है, वह अब्राहम और सारा के संतानोत्पत्ति की उम्र से बहुत पहले वारिसों को जन्म देने के अधिक परिचित पहलू पर आता है। सारा के खुद बांझ होने के कारण, विश्वास के द्वारा, उसे संतानोत्पत्ति की शक्ति प्राप्त हुई, और वह भी उम्र से बहुत पहले, क्योंकि उसने उस व्यक्ति पर विश्वास किया जिसने वादा किया था। इसलिए, एक व्यक्ति से, और ये एक मृत व्यक्ति से, स्वर्ग के तारों और समुद्र तट के किनारे की असंख्य रेत के समान असंख्य संतानें उत्पन्न हुईं।

लेखक यहाँ अब्राहम के विश्वास के पहलू का परिचय देता है, जो पॉलिन के पाठकों के लिए अधिक परिचित होगा, अर्थात् सारा के बांझपन और अपनी खुद की वृद्धावस्था के बावजूद अब्राहम को संतान उत्पन्न करने की शक्ति प्राप्त हुई क्योंकि अब्राहम ने वादा करने वाले को विश्वसनीय माना। जन्म देने के लिए मुहावरे की शक्ति को आमतौर पर गर्भधारण में पुरुष के योगदान के संदर्भ में प्रमाणित किया जाता है। इस प्रकार, अब्राहम अभी भी मुख्य रूप से दृष्टि में है।

लेखक यहाँ यह भी याद दिलाता है कि उसने हाल ही में अध्याय 10, श्लोक 23 में क्या कहा था, जहाँ उसने श्रोताओं को उसी कारण से अपनी आशा के अंगीकार को थामे रखने के लिए प्रोत्साहित किया था क्योंकि जिसने वादा किया था वह विश्वसनीय है। अब्राहम के उदाहरण के इस भाग में, लेखक पुष्टि करता है कि जीवन, असंख्य संतानों के रूप में, एक ऐसे व्यक्ति से आया जो मर चुका था। इस श्लोक का अनुवाद किसी ऐसे व्यक्ति से करने की प्रवृत्ति जो लगभग मृत था, ग्रीक की कठोर भाषा से एक कदम पीछे हटती है, जिसमें अब्राहम को केवल एक ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित किया गया है जो मृत या बेजान हो गया था, इस प्रकार मृतकों में से जीवन लाने की परमेश्वर की शक्ति को ऊपर उठाया गया।

अब्राहम के प्रजनन अंगों की मृत्यु से पीढ़ियों का उद्भव, हाबिल और हनोक के मृत्यु से परे होने के पिछले उदाहरणों को प्रतिध्वनित करता है और इस प्रशंसा के जारी रहने पर पद 19 और 35 में इसे और भी प्रतिध्वनित किया जाएगा। यह जोर लेखक के उस लक्ष्य का समर्थन करता है, जिसके तहत श्रोताओं को अपने वर्तमान परिस्थितियों से परे, यहाँ तक कि इस जीवन से परे, परमेश्वर द्वारा वादा किए गए इनाम के लिए देखने के लिए प्रेरित किया जाता है। मृत्यु भी परमेश्वर द्वारा उन लोगों को दिए गए अपने वादे के लाभों को देने में बाधा डालने के लिए पर्याप्त नहीं है जो उस पर भरोसा करते हैं।

अपनी प्रशंसा में इस बिंदु पर, लेखक अब्राहम और कुलपिताओं के उदाहरणों पर एक टिप्पणी जोड़ता है, जो अनिवार्य रूप से अब्राहम के समान ही नाव में सवार हैं, अर्थात् इसहाक, याकूब और याकूब के बेटे, जो अपनी भूमि से बाहर एक दूसरे पर प्रवासी के रूप में रहते हैं। टिप्पणी के रूप में, ये छंद लेखक के उदाहरण सूची के लक्ष्यों को समझने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। यही वह है जिसे वह नहीं चाहता कि श्रोता चूक जाएं।

ये सभी विश्वास की स्थिति में मर गए, वादा किए गए सामान को प्राप्त नहीं किया, बल्कि उन्हें दूर से देखा और उनका अभिवादन किया और स्वीकार किया कि वे पृथ्वी पर अजनबी और निवासी विदेशी थे। क्योंकि जो लोग ऐसी बातें कहते हैं, वे दिखाते हैं कि वे एक मातृभूमि की तलाश कर रहे हैं, और अगर उनके मन में वह भूमि होती, जहाँ से वे बाहर गए थे, तो उनके पास लौटने का अवसर होता। लेकिन अब वे एक बेहतर, यानी स्वर्गीय मातृभूमि की तलाश कर रहे हैं।

इसलिए परमेश्वर को उनका परमेश्वर कहलाने में शर्म नहीं आती, क्योंकि उसने उनके लिए एक नगर तैयार किया है। इन कुलपिताओं द्वारा अपने होठों और अपने जीवन दोनों से किया गया कबूलनामा लेखक के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, अर्थात् वे पृथ्वी पर विदेशी और प्रवासी थे। यह कबूलनामा उत्पत्ति 23, श्लोक 4 और उत्पत्ति 24, श्लोक 37 का मिश्रण है।

इसलिए, लेखक वास्तव में कुलपतियों के वास्तविक भाषण तक वापस पहुँच रहा है, जिसमें पहले अंश में, हम पढ़ते हैं, मैं तुम्हारे बीच एक विदेशी और निवासी विदेशी हूँ, और दूसरे में, मैं उनके देश में एक विदेशी के रूप में रह रहा हूँ। उनके देश में हमारे लेखक द्वारा पृथ्वी पर समझा जाता है, एक स्वर्गीय देश के विपरीत, लेखक की मुख्य रुचि। यह लेखक के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि कुलपतियों ने मातृभूमि और नागरिकता की ओर वापस नहीं देखा, जिसे उन्होंने पीछे छोड़ दिया था जब उन्होंने भगवान के आह्वान को स्वीकार किया और विश्वास में निकल पड़े।

इसके बजाय, वे विदेशी और निवासी विदेशी की निम्न स्थिति को सहन करते रहे, अपनी मृत्यु तक इस स्थिति को अपनाते रहे, बजाय इसके कि वे उस मातृभूमि की खोज से विरत हो जाएँ जिसे परमेश्वर प्रदान करेगा और अपनी जन्मभूमि में अपना स्थान पुनः प्राप्त करने की कोशिश करें। अलेक्जेंड्रिया के फिलो, जो पहली सदी के यहूदी व्याख्याकार थे, अब्राहम के साथ अपने व्यवहार में इसी तरह का जोर दिखाते हैं। दोनों लेखकों के लिए, अब्राहम उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दृढ़ता और प्रतिबद्धता का एक उदाहरण बन जाता है जिसका वादा परमेश्वर ने किया है।

यह, निश्चित रूप से, इब्रानियों के अभिभाषकों के लिए तत्काल प्रासंगिक है, जिन्होंने सामाजिक अव्यवस्था और विस्थापन का सामना किया है, जिनमें से कुछ ने पहले से ही ईश्वर के वादों की ओर यात्रा करने वाले ईसाई समूह से खुद को अलग करना शुरू कर दिया है और समाज की गोद में वापस लौटना शुरू कर दिया है। वे अब निम्न स्थिति और सामाजिक स्वीकृति के निम्न स्तर पर रहना बर्दाश्त नहीं कर सकते, जिसमें मसीह के प्रति उनकी प्रतिबद्धता उन्हें ले आई है। लेखक यहाँ शेष अभिभाषकों की प्रतिबद्धता को मजबूत करने की उम्मीद करता है कि वे अब्राहम और कुलपिताओं की तरह करें, इस संक्षिप्त भौतिक ब्रह्मांड में अपनी जन्मभूमि से दूर उस शाश्वत मातृभूमि की ओर यात्रा में दृढ़ रहें जिसे ईश्वर ने उनके लिए तैयार किया है।

स्वर्गीय देश भी बेहतर देश क्यों है? कुलपिताओं के ईश्वर के वादों पर भरोसा और उनके द्वारा इस बात का बुद्धिमान से मूल्यांकन करने के कारण कि कौन सा कार्य अंततः समीचीन है, उन्होंने वह पहचान लिया है जो लेखक को उम्मीद है कि उसके अभिभाषक पहचान लेंगे: जो ईश्वर के दायरे का है वह शाश्वत है। इसलिए, वहाँ भोगी जाने वाली वस्तुएँ सांसारिक देश और सांसारिक शहरों में भोगी जाने वाली वस्तुओं से कहीं अधिक मूल्यवान हैं जहाँ ईसाई रहते हैं। कुलपिताओं की बुद्धि के कारण, एक ऐसी बुद्धि जिसके बारे में लेखक को उम्मीद है कि उसके अभिभाषक उसका अनुकरण करना जारी रखेंगे, ईश्वर को उनका ईश्वर कहलाने में कोई शर्म नहीं है।

यहाँ, लेखक ने परमेश्वर द्वारा खुद को अब्राहम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर और याकूब के परमेश्वर के रूप में पहचाने जाने का उल्लेख किया है। यह परमेश्वर की ओर से कुलपिताओं के लिए गवाही है कि वे परमेश्वर के अपने नाम के साथ निकटता से पहचाने जाने के योग्य लोग हैं। हम इसकी तुलना इब्रानियों 2 पद 11 में पहले के कथन से कर सकते हैं, जहाँ यीशु को भी विश्वासियों को अपनी बहनें और भाई कहने में शर्म नहीं आने के लिए कहा गया था।

जो लोग परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और परमेश्वर के वादों के असाधारण मूल्य को समझते हैं, उन्हें परमेश्वर के द्वारा या मसीह के साथ उनके खुले जुड़ाव के माध्यम से उनके सम्मान के लिए दिव्य प्रमाण प्राप्त होता है, एक ऐसा जुड़ाव जो अंततः उस व्यक्ति को ईश्वर द्वारा नियुक्त लक्ष्य तक पहुँचाएगा, क्योंकि परमेश्वर ने उनके लिए एक शहर तैयार किया है। अब्राहम की तरह, अभिभाषकों ने परमेश्वर के आह्वान का पालन करने और परमेश्वर के वादा किए गए उपकार के लिए पहुँचने के लिए अपने मूल शहर में अपनी मातृभूमि और स्थिति को पीछे छोड़ दिया। हालाँकि वे शारीरिक रूप से आगे नहीं बढ़े, लेकिन वे कम से कम खुले अपमान के अपने अनुभव के माध्यम से सामाजिक रूप से अलग हो गए।

कुलपिताओं ने अपनी जन्मभूमि पर लौटने के विकल्प को अस्वीकार कर दिया, अर्थात्, मताधिकार और अपमान और खतरे से सुरक्षा के लिए। उनके दिल ईश्वर के वादे पर इतने केंद्रित थे, और वे ईश्वर की विश्वसनीयता पर भरोसा करने में इतने दृढ़ थे कि ईश्वर ने जो वादा किया था उसे पूरा करने के लिए उन्होंने यहाँ जीवन भर के लिए मताधिकार से वंचित रहना पसंद किया ताकि एक बेहतर स्वर्गीय मातृभूमि की खोज में दृढ़ रहें। इस प्रकार, लेखक अभिभाषकों से उनके उदाहरण का अनुकरण करने और ईश्वर द्वारा वादा किए गए पुरस्कार को धर्मत्याग के बजाय प्राथमिकता देने का आग्रह करता है जो अविश्वासी समाज के भीतर अनुग्रह और स्थिति को वापस पाने का सबसे सुरक्षित मार्ग प्रदान करेगा।

संसार में घर जैसा माहौल न होने से इनकार करना ईश्वर के प्रति उनकी निष्ठा और ईश्वर के आह्वान के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। लेखक द्वारा अब्राहम और कुलपिताओं को दिए गए विश्वास पर इस प्रशंसा में शेष स्थान विश्वास पर केंद्रित है, जो पहले इस विश्वास में प्रकट होता है कि ईश्वर के वादे मृत्यु से अधिक शक्तिशाली हैं और दूसरा उन वादों की पूर्ति के लिए मृत्यु से परे देखने की इच्छा। विश्वास के द्वारा, अब्राहम ने, परीक्षण किए जाने पर, इसहाक को बलिदान किया, और जिसने वादे प्राप्त किए थे, वह अपने इकलौते बच्चे को बलिदान करने वाला था,

जिसके बारे में यह कहा गया था कि इसहाक से तुम्हारे वंशज कहलाएंगे, क्योंकि ईश्वर मृतकों में से भी जीवित करने में सक्षम है।

जहाँ से, लाक्षणिक रूप से कहें तो, उसने उसे वापस प्राप्त किया। उपदेशक के अनुसार, अब्राहम द्वारा इसहाक को बाँधना, परमेश्वर के वादों को पूरा करने के परमेश्वर के दृढ़ संकल्प को विफल करने में मृत्यु की अक्षमता पर विश्वास का कार्य था। इस संबंध में, यह प्रकरण हाबिल, हनोक और अब्राहम की संतानों को जन्म देने की क्षमता के प्रकरणों में शामिल हो जाता है, जो इतिहास से इस बात का प्रमाण है कि विश्वास परमेश्वर की मृत्यु को पार करने की क्षमता को देखता है ताकि परमेश्वर ने जो वादा किया है उसे पूरा किया जा सके।

यह प्रकरण, निश्चित रूप से, अब्राहम की कहानी में एक मील का पत्थर है। अब्राहम की परीक्षा के रूप में इस प्रकरण की प्रकृति को उत्पत्ति अध्याय 22, श्लोक 1 में उजागर किया गया है, जैसा कि अब्राहम की तत्परता से अनुपालन है, जिसने अब्राहम को द्वितीय मंदिर काल के साहित्य में ईश्वर के प्रति निष्ठा का सर्वोच्च संकेत बना दिया। जैसा कि उपदेशक उत्पत्ति 22 की कहानी पर विचार करता है, वह यह मानने लगता है कि अब्राहम अपने बेटे इसहाक को बलिदान के रूप में चढ़ाने में सक्षम था क्योंकि अब्राहम को इसहाक को मृतकों में से भी जीवित करने की ईश्वर की शक्ति पर भरोसा था, और इस प्रकार इसहाक के माध्यम से संतान के वादे को पूरा करना था।

इसलिए, यह कहानी, परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता के कारण अब्राहम द्वारा वादे का त्याग करने की इच्छा के बारे में कहानी से कहीं अधिक, परमेश्वर के वादे की अपरिवर्तनीयता में अब्राहम के भरोसे का सबूत बन जाती है। इस प्रकरण के बाद तीन बहुत ही संक्षिप्त उदाहरण दिए गए हैं, जिसमें पीढ़ियों के बीच आशीर्वाद का हस्तांतरण शामिल है, साथ ही उस व्यक्ति का दूरदर्शी उन्मुखीकरण भी शामिल है जो विश्वास या भरोसा प्रदर्शित करता है। विश्वास के द्वारा, इसहाक ने याकूब और एसाव को आशीर्वाद दिया, यहाँ तक कि आने वाली चीज़ों के बारे में भी।

विश्वास से ही, याकूब ने मरते समय यूसुफ के प्रत्येक पुत्र को आशीर्वाद दिया और अपनी लाठी के सिर पर उनकी पूजा की। विश्वास से ही, यूसुफ ने मरते समय अपने मन में इस्राएल के बच्चों के जाने के बारे में सोचा और अपनी हड्डियों के बारे में आज्ञाएँ दीं। यहाँ याकूब द्वारा अपनी लाठी के शीर्ष पर पूजा करने का संक्षिप्त संदर्भ एक और स्थान है जहाँ इब्रानियों के लेखक ने उत्पत्ति के ग्रीक या सेप्टुआजेंट अनुवाद से अपनी परिचितता दिखाई है।

उत्पत्ति 47:31 के हिब्रू पाठ में, हम पढ़ते हैं कि याकूब ने अपने बिस्तर के सिरहाने झुककर प्रणाम किया। इसका सेप्टुआजेंट अनुवाद यह है कि याकूब ने अपने डंडे के सिरहाने झुककर प्रणाम किया। यह केवल बिस्तर के लिए हिब्रू शब्द के अक्षरों पर अलग-अलग स्वरों को शामिल करने का परिणाम है।

लेकिन यह इब्रानियों के लेखक के लिए काफी प्रासंगिक होना चाहिए क्योंकि यह याकूब की पूरी कहानी में से एकमात्र ऐसी चीज़ है जिसे इब्रानियों के लेखक ने उठाया है। याकूब की यह छवि, जो हमेशा रहने वाला प्रवासी है, अपनी छड़ी, अपने तीर्थयात्री की छड़ी के सिर पर बैठकर ईश्वर की आराधना करता है, यह याकूब की अपनी पहचान को अपनाने और अपने जीवन के अंत तक

एक तीर्थयात्री और प्रवासी के रूप में अपनी आशा की पुष्टि करने में दृढ़ता को दर्शाता है। यूसुफ का अतिरिक्त संदर्भ यह दर्शाता है कि लेखक इस प्रशंसा को आकार देते समय कितना चयनात्मक और जानबूझकर है।

यहाँ उन बातों के बारे में कुछ नहीं है जिसके लिए यूसुफ सबसे ज़्यादा जाना जाता है - प्रलोभन के प्रति उसका प्रतिरोध, कठिनाइयों के बावजूद उसका दृढ़ रहना, और अपने भाइयों को क्षमा करना। हमारे पास केवल यूसुफ का उल्लेख उसकी मृत्युशय्या पर है, क्योंकि इससे लेखक को यह उजागर करने का मौका मिलता है कि उसके विश्वास के चित्रण के लिए सबसे ज़्यादा प्रासंगिक क्या है।

मृत्यु की दहलीज पर भी, यूसुफ ने ईश्वर के वादे की पूर्ति की आशा में खुद को उन्मुख करना जारी रखा, मिस्र से पलायन उस पूर्ति की ओर अगला कदम था। यूसुफ ईश्वर के भविष्य के कार्यों के बारे में इतना आश्वस्त था कि वह अपनी हड्डियों के अंतिम विश्राम स्थल के बारे में विशिष्ट निर्देश देता है। इस तरह, यूसुफ लेखक के इस बात पर जोर देने में योगदान देता है कि विश्वास रखने वाला व्यक्ति एक प्रवासी होता है।

मिस्र के राज्य में अपने उच्च पद से भी यूसुफ़ को अभी भी यह समझ में आता है कि वह और उसका पूरा परिवार अभी भी सिर्फ़ एक अस्थायी जगह पर रहता है और मिस्र में उसका कोई स्थायी घर नहीं है। यह आस्था की मुद्रा है, जहाँ कोई व्यक्ति उस जगह को अपना घर समझने के प्रलोभन का विरोध करता है, जहाँ वह अंततः बसने और घुलने-मिलने के लिए है। हरे-भरे मिस्र में भी, यूसुफ़ एक बेहतर स्वर्गीय मातृभूमि की तलाश करता है।

विश्वास पर इस प्रशंसा में विस्तृत ध्यान पाने वाला दूसरा व्यक्ति मूसा है। विश्वास के कारण, मूसा को, जन्म के बाद, उसके माता-पिता ने तीन महीने तक छिपाकर रखा क्योंकि उन्होंने देखा कि बच्चा प्रतिभाशाली था, और वे राजा के आदेश से नहीं डरते थे। विश्वास के कारण, मूसा ने, बड़े होने पर, फिरौन की बेटी का बेटा कहलाने से इनकार कर दिया, पाप के अस्थायी आनंद के बजाय परमेश्वर के लोगों के साथ दुर्व्यवहार को चुना क्योंकि उसने मसीह की निंदा को मिस्र के खजाने से अधिक मूल्यवान माना, क्योंकि वह इनाम की ओर देख रहा था।

विश्वास के कारण, उसने मिस्र को पीछे छोड़ दिया, राजा के क्रोध से नहीं डरता था, क्योंकि वह अदृश्य को देखने वाले के रूप में दृढ़ था। अब्राहम और कुलपिताओं की तरह, लेखक ने मूसा के विश्वास के अपने वर्णन को संबोधित करने वालों की स्थिति की जरूरतों के अनुरूप ढाला है। कानून के दाता और वाचा के मध्यस्थ के रूप में मूसा की प्रसिद्धि का कहीं भी उल्लेख नहीं किया गया है।

मूसा के विश्वास के बारे में लेखक के चित्रण का मुख्य बिंदु यह है कि उसने दुनिया की नज़रों में सम्मान की जगह का त्याग किया और भगवान के लोगों के साथ एकजुटता का विकल्प चुना, भले ही इस तरह के जुड़ाव से सांसारिक स्थिति और उन्नति की संभावना में भारी कमी आई हो। मूसा का पहला अभिनय फिरौन की बेटी का बेटा कहलाने से इनकार करना है। हिब्रू के लेखक के दो निकट समकालीन फिलो और जोसेफस के अनुसार, मूसा अपने गोद लिए जाने के बाद मिस्र के

शाही परिवार का सदस्य था, यहाँ तक कि उसे मिस्र के सिंहासन का उत्तराधिकारी भी माना जाता था।

कम से कम, मूसा ने असाधारण रूप से उच्च स्थिति और सम्मान का स्थान प्राप्त किया। फिरौन के साथ उसके घर का मुखिया, उसका संरक्षक और उसका उपकारकर्ता होने के कारण, मूसा के पास एक महान राज्य के शासक की शक्ति और स्थिति थी और मिस्र के खजाने तक उसकी पहुँच थी। लेकिन मूसा ने उस नियति को त्याग दिया, एक नियति जो अविश्वासी प्रमुख संस्कृति का सदस्य होने के कारण उसकी थी, उसकी सांसारिक विरासत, एक नई आध्यात्मिक विरासत के पक्ष में जो परमेश्वर के लोगों से संबंधित थी।

उसने मिस्र के राजघराने के सम्मान को पीछे छोड़ दिया ताकि वह खुद को एक गुलाम के रूप में शामिल कर सके, जो सबसे निचले दर्जे के लोग थे और अपमान और शारीरिक उत्पीड़न के अधीन थे, जिसे यहाँ दुर्व्यवहार शब्द में व्यक्त किया गया है। मूसा के सामने जो चुनाव था, पाप के अस्थायी सुख का आनंद लेना या ईश्वर के लोगों के साथ दुर्व्यवहार का चयन करना, उन निर्णयों से प्रतिध्वनित होता है जो उपदेशक के श्रोताओं को अतीत में लेने पड़े थे, जैसा कि उपदेशक ने अध्याय 10, श्लोक 33 और 34 में बताया है। मूसा ने जो चुनाव किए, उन्हें अध्याय 13, श्लोक 3 में समुदाय की वर्तमान स्थिति में भी अनुकरण के लिए रखा जाएगा, अर्थात् उन लोगों के साथ एकजुटता दिखाना जारी रखना जो जेल में हैं और जो दुर्व्यवहार सहते हैं, जैसे कि उनके साथ शरीर में हैं।

इस प्रकार मूसा का उदाहरण इस विशेष समुदाय के लिए लेखक के उपदेश के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हालाँकि, मिस्र के दरबार का आनंद दो शब्दों द्वारा परिभाषित किया गया है जो इसके मूल्य की कमी को दर्शाते हैं। यह स्थायी होने के बजाय अस्थायी है, इसलिए वफादार की विरासत स्थायी है और इसलिए, मिस्र के खजाने के घरों के आनंद से भी अधिक मूल्यवान है।

इसे पाप के रूप में भी जाना जाता है, जो व्यक्ति को ईश्वर से अलग करता है और उसे ऐसी जगह पर रखता है जहाँ वह ईश्वर के न्याय के अधीन खड़ा होता है। इस अंश में, पाप को फिर से इस तरह से प्रस्तुत किया गया है जो यह सुझाव देता है कि लेखक पाप में सबसे अधिक रुचि रखता है क्योंकि जब ईश्वर के लोगों के साथ संगति करने से इनकार कर दिया जाता है या अविश्वासियों के समाज में एक स्थान या आनंद की तलाश करने के प्रलोभन के कारण बंद कर दिया जाता है। पाप तब होता है जब कोई ईश्वर की मित्रता के मूल्य को दुनिया की मित्रता से कम महत्व देता है जब कोई सम्मान की खातिर ईश्वर के लोगों के साथ दुर्व्यवहार करना छोड़ देता है, जैसा कि मसीह के दुश्मन सम्मान को परिभाषित करते हैं और सम्मान देते हैं।

मूसा का चुनाव मसीह के खजानों और मसीह की निंदा के संबंधित मूल्य के उसके मूल्यांकन से प्रेरित है। अपनी आँखों को पुरस्कार पर दृढ़ता से टिकाए रखते हुए, उसने पाया कि बाद वाला, परमेश्वर के अभिषिक्त की निंदा, एक बड़ा खजाना है। विश्वास व्यक्ति को शाश्वत वास्तविकताओं के प्रकाश में सांसारिक वास्तविकताओं का मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित करता है, जैसे कि परमेश्वर की आज्ञाकारिता में चलने के कारण दुनिया की अदालत के सामने निंदा और अपमान

भी, परमेश्वर की अदालत के सामने सम्मान के मार्ग में परिवर्तित हो सकता है और खुद को सांसारिक खजानों से अधिक मूल्यवान माना जा सकता है।

इब्रानियों 13 पद 3 में, अभिभाषकों को भी अपने हालात में मसीह की निंदा सहने के लिए कहा जाएगा। मूसा के उदाहरण को श्रोताओं की पादरी संबंधी ज़रूरतों के हिसाब से ढाला गया है ताकि वे अपने विश्वास को अपने तरीके से पेश कर सकें। और इस अनुकूलन के कारण लेखक ने मूसा को साहित्यिक दंभ के साथ चित्रित किया होगा, जो कि संबोधित करने वालों को मसीह की निंदा के बारे में वही मूल्यांकन करना चाहिए जो पाप के अस्थायी आनंद से ज़्यादा मूल्यवान है।

अपने माता-पिता की तरह, मूसा भी राजा के क्रोध से डरने की कमी दिखाता है और मिस्र को पीछे छोड़कर जीवन और मृत्यु पर अधिकार रखने वालों के प्रति अपनी उदासीनता प्रदर्शित करता है। इब्रानियों 11 पद 27 में, यहाँ इस बात पर कुछ बहस है कि लेखक मिस्र से किस प्रस्थान के बारे में सोच रहा है। क्या यह मिस्री की हत्या करने के बाद मूसा का मिद्यान की ओर प्रस्थान है? या क्या यह निर्गमन के समय इब्रानियों के मुखिया के रूप में उसका प्रस्थान है? लेखक के मन में शायद बाद वाला अधिक संभावित है क्योंकि मूसा का मिद्यान की ओर भागना वास्तव में ठीक इसलिए प्रेरित था क्योंकि वह राजा के क्रोध से डरता था, जैसा कि निर्गमन अध्याय 2, पद 14 और 15 में पढ़ा जा सकता है।

हालाँकि, यह भी मामला है कि द्वितीय मंदिर काल के यहूदियों ने उस समय मूसा की कहानी को फिर से लिखा, जिसमें मूसा को हत्या के लिए दोषमुक्त किया गया और साथ ही उसके भागने के कारण के रूप में कायरता को भी समाप्त किया गया। उदाहरण के लिए, पहली सदी के इतिहासकार फ्लेवियस जोसेफस लिखते हैं कि यह फिरौन ही था जो मूसा से डरता था और जिसने मूसा की हत्या करने की कोशिश की थी। इसलिए, मूसा का जाना केवल एक बुद्धिमान व्यक्ति का कार्य बन जाता है जो अपने जीवन को बचाने के लिए सोचता है, और भागना उसके लिए बुद्धि और धीरज दिखाने का एक अवसर बन जाता है।

आर्टाफानस ने भी फिरौन की ईर्ष्या और हत्या के प्रयास की कहानी बताई है। दरअसल, यह हत्यारा ही है जिसे मूसा ने आत्मरक्षा में मार डाला। इसलिए, इब्रानियों के लेखक ने स्वाभाविक रूप से मिस्र से मूसा के शुरुआती प्रस्थान के साथ भय को नहीं जोड़ा होगा।

हालाँकि, लेखक का मुख्य बिंदु यह है कि मूसा ने मिस्र को पीछे छोड़ दिया, ठीक वैसे ही जैसे अब्राहम ने अपनी मातृभूमि को पीछे छोड़ दिया और जैसे अभिभाषकों ने समाज में अपना स्थान पीछे छोड़ दिया। यह तय करने का प्रयास कि यह मिद्यान की ओर पलायन था या पलायन ही लेखक के अपने जोर के लिए गौण है, और इस बिंदु पर उसकी खुद की स्पष्टता की कमी सटीक होने में उसकी रुचि की कमी को दर्शा सकती है। यहाँ मूसा की आंतरिक आँख का ध्यान भी बहुत महत्वपूर्ण है।

लेखक कहते हैं कि मूसा ने अदृश्य को देखने वाले के रूप में कष्ट सहा, शायद विशेष रूप से अदृश्य ईश्वर को। यही वह बात थी जिसने मूसा को सही चुनाव करने और उन चुनावों से जुड़ी कठिनाइयों को सहने में सक्षम बनाया। मूसा के उदाहरण से संबोधित लोगों को भी चुनौती दी

जाती है कि वे अपनी आँखें अदृश्य पर टिकाएँ और अडिग रूप से अडिग क्षेत्र की ओर अपना मार्ग बनाएँ।

लेखक मूसा के उदाहरण पर विचार करना जारी रखता है और उसके भरोसे के उदाहरण से सीधे इस्राएल के लोगों द्वारा पलायन और विजय में दिखाए गए ईश्वर पर भरोसे में बदल जाता है, राहाब के उल्लेखनीय उदाहरण के साथ समापन करता है, वह विदेशी जिसने ईश्वर के लोगों और ईश्वर के शत्रुओं के लिए ईश्वर के डिजाइन को पहचाना और यरीहो पर आने वाले न्याय के प्रकाश में बुद्धिमानी से काम किया। विश्वास से, मूसा ने फसह और रक्त के छिड़काव को मनाया ताकि विध्वंसक उनके पहलौठों को न मार सके। विश्वास से, वे लाल सागर को पार कर गए जैसे कि सूखी भूमि से, और जब मिस्त्रियों ने ऐसा करने का प्रयास किया, तो वे निगल गए।

विश्वास के कारण, सात दिनों तक घेरे रहने के बाद यरीहो की दीवारें गिर गईं। विश्वास के कारण, वेश्या राहाब को अवज्ञाकारियों के साथ नष्ट नहीं किया गया क्योंकि उसने शांति से जासूसों का स्वागत किया था। लेखक यहाँ फसह के भोजन के बारे में सोचना शुरू करता है, जो ईश्वर द्वारा वादा किए गए मुक्ति के पहले का उत्सव है, लेकिन फिरौन की सहमति से सांसारिक क्षेत्र में अभी तक वास्तविक नहीं हुआ है।

इसलिए फसह का भोज भी आस्था के अग्रगामी अभिविन्यास का एक और उदाहरण है जो अभी मनाता है कि परमेश्वर को क्या करना है या परमेश्वर ने क्या करने का वादा किया है। रक्त का छिड़काव, निर्गमन 12, श्लोक 7, 13, और 21 से 23 का संदर्भ, एक ऐसा कार्य था जिसका उद्देश्य ज्येष्ठ पुत्र को विध्वंसक, मृत्यु के दूत से बचाना था, जो अभी मिस्र में अपना रास्ता बनाने वाला है, इसलिए फिरौन को पूरी तरह से कोड़े मार रहा है ताकि फिरौन आखिरकार परमेश्वर के ज्येष्ठ पुत्र, इस्राएल को छोड़ दे। फसह का भोज और इस्राएलियों के दरवाजों पर रक्त का छिड़काव दोनों ही भरोसे या आस्था में किए जाते हैं क्योंकि दोनों ही परमेश्वर के वादों की आगामी पूर्ति से संबंधित हैं।

उनका उदाहरण फिर से श्रोताओं को स्पष्ट रूप से बताता है, जिन्हें लेखक दृढ़ता से आश्चस्त करना चाहता है कि परमेश्वर का भविष्य उनके पक्ष में कार्य करता है और अधर्मियों के विरुद्ध परमेश्वर का भविष्य का कार्य यह दिखाएगा कि उनका मार्ग बुद्धिमानी भरा था। लाल सागर को पार करने के समय, निर्गमन 14:21 से 31 में वर्णित एक घटना, हमें विश्वास का एक और चरम कार्य मिलता है। पानी की दो दीवारों के बीच चलना, निश्चित रूप से, विश्वास का एक सर्वोच्च कार्य है क्योंकि इब्रानियों ने अपना जीवन पूरी तरह से परमेश्वर के हाथों में सौंप दिया था।

शायद लाल सागर पर ही मूसा की संगति के चयन की बुद्धिमत्ता सबसे अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। उस दिन, परमेश्वर के लोगों से संबंधित होने का मूल्य सिद्ध हुआ। इब्रानियों 11:7 में बाढ़ के साथ-साथ लाल सागर, युगांतिक न्याय का एक प्रोटोटाइप बन जाता है। लाल सागर को सफलतापूर्वक पार करना या लाल सागर में डूब जाना न्याय के उस अंतिम दिन की पूर्वसूचना देता है जो एक बार में विश्वासियों के लिए उद्धार और उन लोगों के लिए विनाश का संकेत देता है जिन्होंने परमेश्वर के लोगों के साथ अपना भाग्य नहीं जोड़ा है।

जैसे ही लेखक पलायन की कहानी से विजय की कहानी की ओर बढ़ता है, वह जेरिको में दिखाए गए भरोसे के प्रदर्शन को देखता है, जोशुआ 6 की कहानी का संदर्भ देता है, जहाँ भगवान ने निर्देश दिए और आश्वासन दिया कि शहर की किलेबंदी की दीवारें सबसे अपरंपरागत तरीकों से गिरेंगी। भगवान के वादे पर भरोसा करते हुए, जोशुआ के सैनिकों ने शहर के चारों ओर मार्च करते हुए सात दिन बिताए, वास्तव में अविश्वासियों की नज़र में यह मूर्खता का काम था। फिर भी जो व्यक्ति भगवान के वादों पर भरोसा करता है, वह भगवान की आज्ञाओं का पालन करता है और भगवान की आज्ञाओं का सम्मान करता है, भले ही सामान्य ज्ञान कहता हो कि यह युद्ध जीतने का कोई तरीका नहीं है।

जेरिको की दीवारों के भीतर, राहाब को एहसास हुआ कि उसका अस्तित्व किसी सांसारिक शहर की किलेबंदी के भीतर नहीं बल्कि परमेश्वर के लोगों के साथ साझेदारी में है। जब हिब्रू जासूस खुफिया जानकारी इकट्ठा करने के लिए शहर में घुसे, तो राहाब ने जासूसों का अपने अपार्टमेंट में स्वागत किया। उसकी कहानी हमें जोशुआ अध्याय 2 की कथा में कुछ कदम पीछे ले जाती है। वहाँ, राहाब ने इब्रानियों को कनान की भूमि देने के परमेश्वर के वादे में विश्वास की एक आश्चर्यजनक स्वीकारोक्ति की, जिसके आधार पर उसने अपने मूल शहर के लिए एक गद्दार बनने का फैसला किया, परमेश्वर के लोगों के प्रतिनिधियों को आतिथ्य और शरण दी और उन्हें सुरक्षित रखने और शहर में उनकी उपस्थिति का पता चलने पर उन्हें नुकसान से बचाने में मदद करने के लिए कड़ी मेहनत की।

क्योंकि वह इस तरह से परमेश्वर के लोगों से जुड़ जाती है, इसलिए जेरिको के विनाश में केवल उसका परिवार ही विनाश से बच जाता है। जेरिको में राहाब का उदाहरण इस दृष्टिकोण को पुष्ट करता है कि हर सांसारिक शहर अस्थिर और अनित्य है। जेरिको की तरह, वे भी परमेश्वर के वचन से बिना एक भी पत्थर फेंके गिर सकते हैं।

सांसारिक शहरों की कोई अंतिम नींव नहीं है, और सबसे बुद्धिमानी भरा कदम यही है कि परमेश्वर के लोगों के साथ मिलकर परमेश्वर के साथ शांति की खोज की जाए ताकि उस विनाश से बचा जा सके जो अवज्ञाकारी लोगों पर आएगा।